सत्यमेव जयते

राजस्थान सरकार

पंच गौरव–जिला चूरू

जिला प्रशासन, चूरू

चूरू एक नजर में

1. जिले में कुल **7** उपखण्ड एवं **10** तहसील तथा **6** उप तहसील है।
2. जिले में कुल **7** पंचायत समितियां हैं।
3. जिले में **3** नगर परिषद् व **7** नगरपालिकाएं हैं।
4. जिले का कुल क्षेत्रफल **10859** वर्ग किलोमीटर है।
5. वर्ष **2011** की जनगणना के अनुसार जिले की कुल जनसंख्या **2039547** है। (शहरी - **576235** व ग्रामीण - **1463312**)
6. चूरू जिले की सीमा हरियाणा राज्य के अलावा राजस्थान के हनुमानगढ़, झुंझुनू, बीकानेर जिले से लगती है।
7. चूरू जिले में पड़िहारा (रतनगढ़) में एक हवाई पट्टी स्थित है।

जिला	अति. जिला कलक्टर	उपखण्ड	पंचायत समिति	तहसील	उप तहसील	ग्राम पंचायत	पटवार मंडल	राजस्व ग्राम
चूरू	2	7	7	10	6	304	270	920

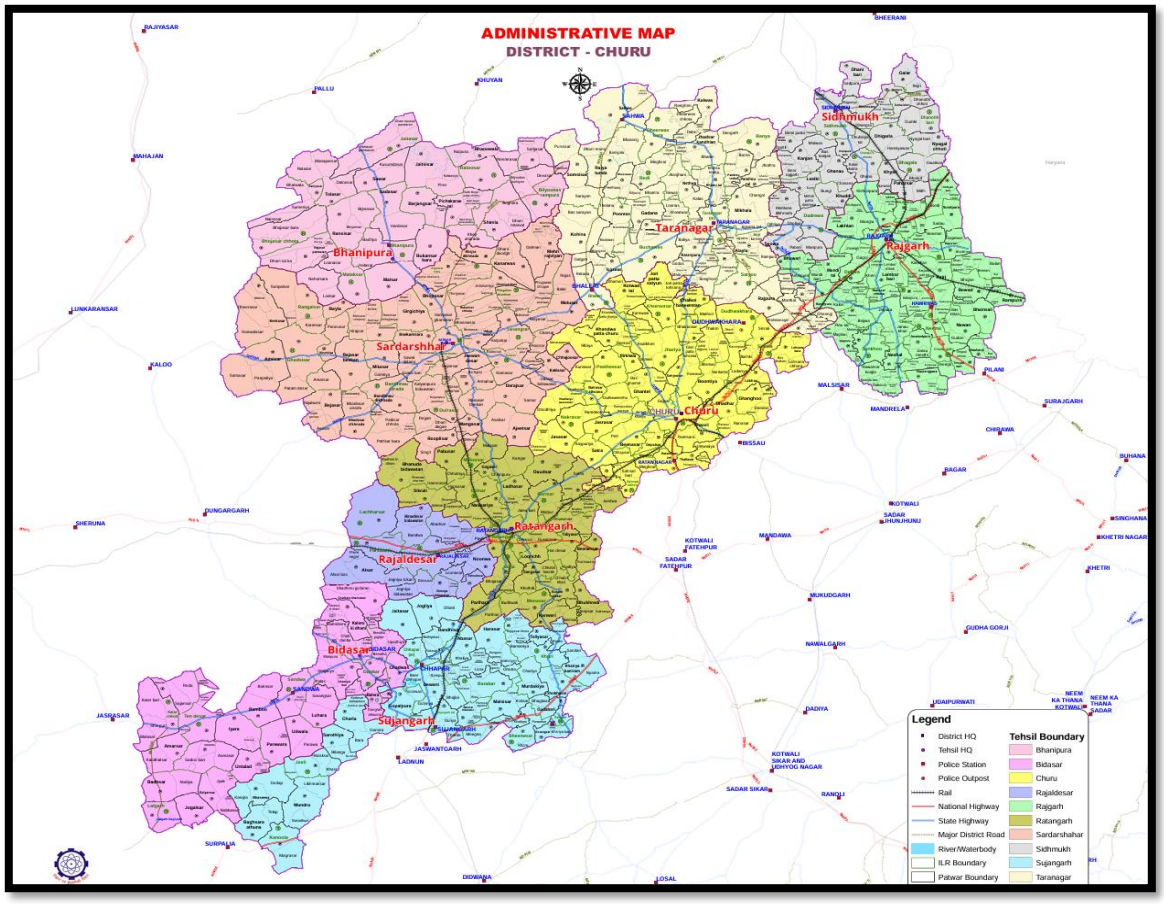

सत्यमेव जयते

मुख्यमंत्री
राजस्थान

संदेश

राजस्थान को अपनी भौगोलिक विविधताओं, प्राकृतिक संपदा और समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के लिए जाना जाता है। यहां हर जिले की अपनी एक विशिष्ट पहचान है, जो वहां की उपज, हस्तशिल्प, औद्योगिक उत्पाद, खनिज संपदा और पर्यटन स्थलों में परिलक्षित होती है। इन विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए राज्य सरकार ने पंच–गौरव कार्यक्रम की शुरूआत की है, जिसका उद्देश्य प्रत्येक जिले की क्षमता एवं विशिष्टता को पहचानते हुए उनके संरक्षण, संवर्धन तथा विकास के माध्यम से जिलों को एक मजबूत सांस्कृतिक और आर्थिक पहचान प्रदान करना है।

इस कार्यक्रम के तहत हर जिले में **पंच गौरव के रूप में एक उत्पाद, एक उपज, एक वनस्पति प्रजाति, एक खेल और एक पर्यटन स्थल चिह्नित** किया गया है। यह पहल जिलों की विरासत एवं पर्यावरण के संरक्षण में सहायक होगी और इससे आर्थिक उन्नति तथा रोजगार के नए अवसर सृजित होंगे।

मुझे विश्वास है कि पंच गौरव कार्यक्रम से आमजन के लिए स्थानीय स्तर पर रोजगार के अवसर, कौशल उन्नयन, उत्पादकता में वृद्धि एवं विभिन्न क्षेत्रों के मध्य स्वस्थ प्रतिस्पर्धा की भावना उत्पन्न करने में मदद मिलेगी। साथ ही हमारे संयुक्त प्रयासों से विकसित राजस्थान का सपना भी साकार होगा।

जिले में पंच–गौरव कार्यक्रम अपने उद्देश्यों को हासिल करने में सफल हो, इसके लिए में अपनी हार्दिक शुभकामनाए प्रेषित करता हूं।

(भजन लाल शर्मा)

राजस्थान सरकार

संदेश

राज्य सरकार द्वारा प्रदेश के सर्वांगीण विकास एवं जनकल्याण हेतु सतत् रूप से क्रियान्वित की जा रही योजनाओं एवं नवाचारों के अंतर्गत, राज्य सरकार के सफलतम एक वर्ष के कार्यकाल की उपलब्धियों के सुअवसर पर प्रदेश के समस्त जिलों में 'पंच गौरव कार्यक्रम' का शुभारम्भ किया गया है। कार्यक्रम के अंतर्गत प्रत्येक जिले की विशिष्टताओं एवं सांस्कृतिक, आर्थिक, प्राकृतिक एवं ऐतिहासिक धरोहरों को चिन्हित करते हुए पंच गौरव का चयन किया गया है, जिससे स्थानीय स्तर पर विकास की नवीन संभावनाओं को सशक्त रूप प्रदान किया जा सके।

चूरू जिले की विरासत एवं पारिस्थितिकी को ध्यान में रखते हुए पंच गौरव के रूप में एक जिला–एक वनस्पति प्रजाति–खेजड़ी, एक जिला–एक पर्यटन स्थल सालासर बालाजी मन्दिर, एक जिला–एक उपज ग्वारपाठा, एक जिला एक खेल–एथलेटिक्सि, एक जिला–एक उत्पाद वुडन उत्पाद चिन्हित किये गए है। जिला प्रशासन चूरू द्वारा इन पंच गौरवों के क्षेत्र में नवाचारों एवं विकासोन्मुखी योजनाओं के समन्वय से दीर्घकालिक कार्य योजना तैयार कर, संबंधित विभागों के सहयोग से सतत् एवं लक्षित प्रयास किए जा रहे हैं, जिससे जिले को सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक प्रगति के पथ पर अग्रसर किया जा रहा है।

इन पंच गौरवों के ऐतिहासिक महत्व, आर्थिक लाभ, क्षेत्रीय विकास में भूमिका, भावी कार्ययोजना एवं छायाचित्रों का समावेश करते हुए 'पंच गौरव जिला चूरू' नामक एक परिसंहित पुस्तिका का प्रकाशन किया जा रहा है। यह पुस्तिका जिले की गौरवशाली विरासत से परिचय कराने के साथ–साथ एक समृद्ध सूचना स्रोत के रूप में भी उपयोगी सिद्ध होगी।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि 'पंच गौरव जिला चूरू' पुस्तिका, जिले की विशिष्ट पहचान को सुदृढ़ करने एवं विकासोन्मुख प्रयासों को गति देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी।

सफल प्रकाशन हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

(अभिषेक सुराणा)
आई.ए.एस.
जिला कलक्टर, चूरू

पंच गौरव–जिला चूरू

राज्य सरकार द्वारा प्रदेश के सर्वांगीण विकास एवं जनकल्याण हेतु सतत् रूप से क्रियान्वित की जा रही योजनाओं एवं नवाचारों के अंतर्गत, राज्य सरकार के सफलतम एक वर्ष के कार्यकाल की उपलब्धियों के सुअवसर पर प्रदेश के समस्त जिलों में 'पंच गौरव कार्यक्रम' का शुभारम्भ किया गया है। चूरू जिले की विरासत एवं पारिस्थितिकी को ध्यान में रखते हुए पंच गौरव के रूप में एक जिला–एक वनस्पति प्रजाति–खेजड़ी, एक जिला–एक पर्यटन स्थल सालासर बालाजी मन्दिर, एक जिला–एक उपज ग्वारपाठा, एक जिला एक खेल–एथलेटिक्स, एक जिला–एक उत्पाद वुडन उत्पाद चिन्हित किये गए है। जिला प्रशासन चूरू द्वारा इन पंच गौरवों के क्षेत्र में नवाचारों एवं विकासोन्मुखी योजनाओं के समन्वय से दीर्घकालिक कार्य योजना तैयार कर, संबंधित विभागों के सहयोग से सतत् एवं लक्षित प्रयास किए जा रहे हैं, जिससे जिले को सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक प्रगति के पथ पर अग्रसर किया जा रहा है।

पंच गौरव प्रोत्साहन कार्यक्रम में जिला स्तर पर कार्यक्रम के प्रभावी संचालन हेतु श्रीमान जिला कलक्टर महोदय की अध्यक्षता में जिला स्तरीय समन्वय समिति का गठन किया गया है।

जिला स्तरीय समन्वय समिति की प्रथम बैठक का आयोजन श्रीमान जिला कलक्टर महोदय की अध्यक्षता में दिनांक 10 फरवरी, 2025 को किया गया। बैठक में पंच गौरव प्रोत्साहन कार्यक्रम के प्रभावी संचालन हेतु तैयार की गई कार्ययोजना का अनुमोदन किया गया।

एक जिला एक खेल– एथलेटिक्स

चूरू जिले में एथलेटिक्स लोकप्रिय खेलों में से एक है। यहाँ से पूर्व में भी बहुत से खिलाड़ियों ने अन्तर्राष्ट्रीय स्तर, राष्ट्रीय स्तर और राज्य स्तर पर चूरू जिले का **मान बढ़ाया** है ।

पंच गौरव कार्यक्रम के तहत ''वन डिस्ट्रिक्ट वन स्पोर्ट्स'' (One District' One Sports) एथलेटिक्स खेल का चयन किया गया है। पंच गौरव कार्यक्रम एक जिला–एक खेल–एथलेटिक्स योजना का उद्देश्य चूरू के **हर तहसील में** एथलेटिक्स **खेल को बढ़ावा** देना और वहां के युवाओं को खेलों में भागीदारी के लिए प्रेरित करना है। इस पहल का **लक्ष्य** खेल को एक सांस्कृतिक और सामाजिक महत्व देना है, ताकि युवा पीढ़ी शारीरिक **व** मानसिक रूप से स्वस्थ रह सके और साथ ही उन्हें राष्ट्रीय **व** अंतरराष्ट्रीय स्तर पर खेलों में सफलता पाने के लिए आवश्यक अवसर और संसाधन मिल सकें।

यह योजना विशेष रूप से एक जिला एक खेल पर केंद्रित है। इसके माध्यम से राज्य और **केन्द्र सरकार** जिले में खेल का इन्फ्रास्ट्रक्चर सुधारने, खिलाड़ियों को प्रशिक्षित करने और उन्हें प्रतिस्पर्धी माहौल प्रदान करने का प्रयास कर रही हैं।

- **एथलेटिक्स खेल का प्रचार–प्रसारः–** चूरू जिले में एक प्रमुख खेल एथलेटिक्स का चयन किया गया है, जिसे यहा के युवाओं में लोकप्रिय बनाने के लिए प्रचारित किया जाना है।

- **इन्फ्रास्ट्रक्चर का सुधार** – एथलेटिक्स खेल के लिए आवश्यक इन्फ्रास्ट्रक्चर की स्थिति को सुधारना और खेल सुविधाओं को बेहतर बनाना।

- **प्रशिक्षण और प्रतिस्पर्धा –** पंच गौरव कार्यक्रम के तहत एक जिला एक खेल– एथलेटिक्स में स्थानीय स्तर पर खिलाड़ियों को पेशेवर प्रशिक्षण देना और उन्हें विभिन्न प्रतियोगिताओं में भाग लेने का अवसर प्रदान करना।

- **मानसिक और शारीरिक विकासः** एथलेटिक्स खेल के माध्यम से युवाओं को मानसिक और शारीरिक रूप से सशक्त **बनाने पर विषेष फोकस किया जायेगा।**

पंच गौरव कार्यक्रम के तहत "वन डिस्ट्रिक्ट वन स्पोर्ट्स" (One District' One Sports) एथलेटिक्स खेल को बढावा देने हेतु जिले में निम्न कार्य किये जा रहे हैं–

- एक जिला एक खेल एथलेटिक्स के तहत ब्लॉक राजगढ, चूरू में अर्न्तराष्ट्रीय सिंथेटिक एथलेटिक्स ट्रैक बना हुआ है, जिसमें अल्पकालिन एथलेटिक्स प्रशिक्षक की नियुक्ति कर दी गई है तथा प्रशिक्षण कार्य प्रारम्भ कर दिया गया है। एक जिला एक खेल एथलेटिक्स में अल्पकालिन प्रशिक्षकों द्वारा विभिन्न ईवेन्टस (जैसे –100 मीटर, 200 मीटर, 400 मीटर, 1600 मीटर, लम्बीकूद, **ऊँची**कूद, त्रिकूद, गोला **फेंक**, भाला **फेंक,** तस्तरी **फेंक,** हैमर थ्रो आदि में लगभग 80 प्रशिक्षणार्थियों को उच्च स्तरीय प्रशिक्षण दिया जा रहा है।
- राजगढ, चूरू में एथलेटिक्स का खेलो इंडिया सेन्टर संचालित है, जिसमें लगभग 40 से 50 **प्रशिक्षणार्थी** विभिन्न ईवेन्टस में **पूर्व** चैम्पियन प्रशिक्षक द्वारा उच्च स्तरीय प्रशिक्षण दिया जा रहा है। खेलो इंडिया योजना के तहत खिलाडियों को निःशुल्क खेल उपकरण व प्रशिक्षण उपलब्ध करवाया जा रहा है। भारत सरकार द्वारा खेलो इंडिया सेन्टर को पांच लाख रूपये की राशि प्रति वर्ष प्राप्त होती है, जिसमें तीन लाख रूपये **पूर्व** चैम्पियन प्रशिक्षक का वेतन भुगतान एवं दो लाख रूपये एथलेटिक्स खेल उपकरण क्रय करने हेतु दिये जाते है।
- एक जिला एक खेल योजना के तहत रतनगढ के सेठ बुधमल दुगड़ नेहरू स्टेडियम में 400 मी. सिन्डर ट्रैक, कार्यालय भवन व अन्य खेल सुविधाए संचालित है तथा तारानगर में 400 मी. सिन्डर ट्रैक बना हुआ है।
- पंच गौरव कार्यक्रम के तहत एक जिला एक खेल एथलेटिक्स राजगढ में एथलेटिक्स अकादमी भवन निर्माण कार्य प्रारम्भ कर दिया गया है।
- राजगढ, चूरू में पंच गौरव के तहत 75 खिलाडियों को उच्च स्तर का प्रशिक्षण दिया जा रहा है।
- जिला खेल स्टेडियम में दिनांक 12.12.2024 को राज्य सरकार के एक वर्ष का कार्यकाल पूरा होने के मौके पर पंच गौरव कार्यक्रम के तहत जिला प्रशासन की ओर से मैराथन का आयोजन किया गया, जिसमें पांच किलोमीटर महिला, दस किलोमीटर पुरुष और 21 किलोमीटर पुरुष मैराथन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। खिलाड़ियों को पांच हजार रुपए तक का नकद इनाम दिया गया।

- महिला दिवस 8 मार्च, 2025 को पंच–गौरव कार्यक्रम के तहत एक जिला एक खेल एथलेटिक्स में महिला मैराथन का आयोजन किया गया।

पंच गौरव कार्यक्रम के तहत एक जिला एक खेल एथलेटिक्स खेल को बढावा देने के लिए करवाये जाने वाले प्रस्तावित कार्यो की कार्य–योजना

क्रंस	बिन्दु	कार्य–योजना	संबंधित विभाग
1	जिले के स्टेडियम, ट्रेनिंग सेंटर, हॉस्टल आदि का उन्नयन।	चूरू जिले के विभिन्न ब्लॉक में स्थित स्टेडियम, ट्रेनिग सेंटर, हॉस्टल आदि के विकास हेतु भविष्य की योजनाओं पर कार्य किया जाना है, जिससे खिलाडियों के कौषल व दक्षता में बढ़ावा मिल सके तथा खिलाड़ियों के लिए आधारभूत सुविधाओं को विकसित किया जा सके।	जिला क्रीड़ा परिषद, चूरू
2	खिलाड़ियों को प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए स्कूलों व कॉलेजों में खेलों का महत्व स्थापित करना।	पंच गौरव कार्यक्रम के तहत विभिन्न स्कूलों एवं कॉलेजों में खेलों का महत्व स्थापित किया जाना है। विभिन्न स्कूलों एंव कॉलेजों के विभिन्न खिलाडियों को संबंधित खेल की जानकारी उपलब्ध करवाकर अधिकाधिक खिलाड़ियों को लाभान्वित किया जाना है।	जिला क्रीड़ा परिषद, चूरू
3	जिले के चयनित खेल के अनुसार खिलाड़ियों के उचित प्रशिक्षण के लिए आवश्यक उपकरण प्रदान करना।	पंच गौरव कार्यक्रम के तहत एक जिला एक खेल के अनुसार विभिन्न ब्लॉकों में खिलाडियों के उचित प्रशिक्षण के लिए आवश्यक खेल उपकरण उपलब्ध करवाये जाने हैं।	जिला क्रीड़ा परिषद, चूरू
4	आवश्यकतानुसार खिलाड़ियों को आवास और पोषण संबंधी सहायता के लिए उचित आवासीय सुविधाएं प्रदान करना।	पंच गौरव कार्यक्रम योजना के तहत खिलाड़ियों को आवश्यक आवास एवं पोषण संबंधी सहायता के लिए उचित आवास एवं पोषण सुविधा उपलब्ध करवाई जायेगी।	जिला क्रीड़ा परिषद, चूरू
5	खेलों से संबंधित आवश्यक जानकारी (सुविधाओं, आयोजनों, खिलाड़ियों को सहायता आदि) ऑनलाइन और सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर उपलब्ध कराना।	पंच गौरव कार्यक्रम योजना के तहत खिलाड़ियों की सहायता हेतु विभिन्न खेलों से संबंधित आवश्यक जानकारी ऑनलाईन व सोशल मीडिया पर उपलब्ध करवाई जायेगी ताकि खेलों को बढ़ावा दिया जा सके।	जिला क्रीड़ा परिषद, चूरू
6	रतनगढ़ व तारानगर में सिंथेटिक एथलेटिक ट्रैक बनाया जाना	रतनगढ़ व तारानगर में खेल विभाग के नाम से भूमि उपलब्ध है। उक्त दोनों जगह पर 400 मीटर का सिंडर ट्रेक बना हुआ है। अत खिलाड़ियों के हितों को ध्यान में रखते हुए तथा खिलाड़ियों को खेल चोट से बचाने के लिए सिंथेटिक एथलेटिक ट्रैक बनाया जाना आवश्यक है।	जिला क्रीड़ा परिषद, चूरू
7	सालासर एवं सुजानगढ़ में खेल मैदान एवं मल्टीपर्पज इंडोर हॉल	सालासर व सुजानगढ़ में खेल मैदानों का विकास एवं मल्टीपर्पज इंडोर हॉल बनाया जाना आवश्यक है ताकि खिलाड़ियों को उक्त सुविधाए मिल सके। चूरू जिले में प्रतिभाओं की कमी नहीं है। इसलिए खिलाड़ियों के हितो को ध्यान में रखते हुए मल्टीपर्पज इंडोर हॉल व खेल सुविधाए विकसित की जानी है।	जिला क्रीड़ा परिषद, चूरू
8	चूरू में भारोत्तोलन खेल अकादमी स्थापित किया जाना	चूरू जिले में भारोत्तोलन खेल में प्रत्येक वर्ष राज्य व राष्ट्रीय स्तर पर पदक आते है। यहां चूरू में राज्य के विभिन्न जिलों से अभ्यास करने के लिए आते है लेकिन यहां सुविधा नहीं होने के कारण खिलाड़ी जिले से बाहर अभ्यास करने के लिये जाते हैं। अतः खिलाडियों के हितो को ध्यान में रखते हुए, चूरू में भारोत्तोलन अकादमी स्थापित किया जाना आवश्यक है।	जिला क्रीड़ा परिषद, चूरू

एक जिला एक उपज– ग्वारपाठा (ऐलोवेरा)

चूरू जिले में ऐलोवेरा की खेती के कई फायदे और विशेषताएँ हैं। ऐलोवेरा एक बहुत ही फायदेमंद पौधा हैं। जो जलवायु के हिसाब से भी उपयुक्त होता है, खासकर राजस्थान जैसे शुष्क और गर्म स्थानों के लिए। चूरू जिले में ऐलोवेरा की खेती की कुछ विशेषताएँ निम्नलिखित हैं:

- **शुष्क और गर्म जलवायु के लिए उपयुक्तः** ऐलोवेरा गर्म और शुष्क जलवायु में अच्छी तरह से बढ़ता है। चूरू जिले का मौसम ऐलोवेरा की खेती के लिए अनुकूल है, क्योंकि यहाँ का तापमान उच्च और वर्षा कम होती है।

- **कम पानी की आवश्यकताः** ऐलोवेरा के पौधे कम पानी में भी अच्छी तरह से उग सकते हैं। राजस्थान के जलवायु परिस्थितियों में जहाँ जल स्रोत कम हैं, वहाँ यह विशेषता बहुत फायदेमंद होती है।

- **स्वास्थ्य लाभः** ऐलोवेरा के पौधे के गूदे का इस्तेमाल त्वचा से संबंधित समस्याओं, पेट की बीमारियों और डायबिटीज जैसी समस्याओं के इलाज में किया जाता है। इस पौधे की बढ़ती मांग के कारण किसानों को अच्छे लाभ की उम्मीद रहती है।

- **कम निवेश और ज्यादा मुनाफाः** ऐलोवेरा की खेती में कम निवेश और मेहनत की आवश्यकता होती है। इसके उत्पादन से अच्छा मुनाफा हो सकता है, खासकर जब इसे अच्छे मार्केट में बेचा जाता है।

- **रासायनिक उर्वरकों का कम उपयोगः** ऐलोवेरा प्राकृतिक उर्वरकों के साथ भी अच्छे से उगता है। इसके उत्पादन में रासायनिक उर्वरकों की कम आवश्यकता होती है, जिससे पर्यावरण पर कम प्रभाव पड़ता है।

- **जलवायु परिवर्तन के प्रति सहनशीलताः** चूरू जिले में जलवायु परिवर्तन के कारण ऐलोवेरा एक आदर्श विकल्प साबित होता है, क्योंकि यह अत्यधिक गर्मी और सूखा सहन कर सकता है।

- **रोजगार के अवसरः** ऐलोवेरा की खेती से किसानों को रोजगार के अवसर मिलते हैं। इसके अलावा, खेती से संबंधित व्यापार जैसे ऐलोवेरा आधारित उत्पादों का निर्माण, प्रसंस्करण और विपणन भी रोजगार सृजन में सहायक होते हैं।

जिले में ग्वारपाठा की व्यापारिक खेती की कार्य योजना

चूरू राज्य का शुष्क मरूस्थलीय जिला है। यहां की जलवायु में ग्वारपाठा की व्यापारिक खेती की विपुल सम्भानाएं विद्यमान है। जिले में पूर्व में ग्वारपाठा की खेती की जा रही थी, लेकिन विपणन के पर्याप्त अवसरों के अभाव के प्रमुख कारण से इसकी खेती के क्षेत्र में समय के साथ कमी आई है और अब बहुत कम क्षेत्र में खेती हो रही है।

ग्वारपाठा की खेती करना कठिन नहीं है, लेकिन गुणवत्तायुक्त मांग के अनुसार उत्पादन एवं उत्पादित उपज के विपणन, प्रसंस्करण एवं मूल्यसंव़र्द्धन पर कार्य योजना बनाकर योजनाबद्व तरीके से कार्य करने की आवश्यकता है। जिले में कार्यक्रम की क्रियान्विति के लिए निम्नानुसार कार्ययोजना प्रस्तावित है –

- **<u>क्रियान्वयन कमेटी का गठन –</u>** जिले के संयुक्त निदेशक कृषि, उप निदेशक उद्यान, उप निदेशक आयुष, महा प्रबंधक DIC एवं प्रमुख वैज्ञानिक, कृषि विज्ञान केन्द्र, सरदारशहर की क्रियान्वयन कमेटी का गठन किया गया है। कमेटी द्वारा जिले के संसाधनों, जलवायु के आधार पर ग्वारपाठा की खेती के लिए उपयुक्त क्षेत्रों की पहचान, ग्वारपाठा के प्रसंस्करण, मूल्यसंवृद्धन, विपणन के लिए सभी स्टेकहोल्डर्स से समन्वय करने का कार्य किया जायेगा। सभी स्टेकहोल्डर्स से गहन विचार विमर्श कर वृहत कार्य योजना तैयार करने और इसके क्रियान्वयन के पर्यवेक्षण का कार्य कमेटी द्वारा किया जायेगा।

- **<u>स्टेकहोल्डर्स के मध्य जागरूकता अभियान –</u>** जिले में ग्वारपाठा की अपार सम्भावनाएं है और सफल खेती के लिए इन सम्भावनाओं को वास्तविकता में लाभ सभी स्टेकहोल्डर्स तक पहुंचाने के लिए जागरूकता अभियान चलाया जायेगा। इसके लिए निम्न कार्य प्रस्तावित हैं:–

1. जिला स्तरीय कार्यशालाओं का आयोजन कृषि विज्ञान केन्द्र, सरदारशहर में किया जायेगा। इसमें प्रगतिशील किसान, ग्वारपाठा के प्रसंस्करण एवं आयुष से जुड़े उद्यमी, एफपीओ, कृषि वैज्ञानिक, कृषि विस्तार कर्मी, आयुष व उद्योग विभाग के कार्मिक भाग लेगें। इस कार्यशाला में सभी बिन्दुओं पर चर्चा कर प्रतिभागियों द्वारा प्रभावी कार्ययोजना को कार्य रूप दिया जायेगा।
2. प्रचार प्रसार कर स्टेकहोल्डर्स को ग्वारपाठा की खेती, प्रसंस्करण, विपणन, मूल्य संवर्द्धन के सम्बंध में जागरूक किया जायेगा। इसके लिए कृषि विज्ञान केन्द्र, किसान सेवा केन्द्रों, एफपीओ, एनजीओ आदि पर प्रगतिशित किसानों के साथ गोष्ठियों का आयोजन किया जायेगा। पेम्फलेट्स का प्रकाशन कर वितरण, स्थानीय अखबारों में लेख प्रकाशन, ग्वारपाठा में सफलता की कहानियों का प्रकाशन, प्रगतिशील किसानों के अनुभवों को साझा करने के लिए कार्य किये जायेंगें। आकाशवाणी पर ग्वारपाठा खेती के लाभकारी होने और इसकी व्यापक सम्भावनाओं से जिले के किसानों को जागरूक करने के सम्बंध में विभिन्न कार्यक्रम प्रसारित करवाने के लिए आकाशवाणी से समन्वय किया जायेगा।

3. ग्वारपाठा खेती, प्रसंस्करण एवं विपणन के विभिन्न आयामों और कौशल विकास सम्बंधित प्रशिक्षण के लिए कृषि विज्ञान केन्द्र, सरदारशहर को नोडल प्रशिक्षण केन्द्र के रूप में विकसित किया जायेगा।

- **<u>विपणन एवं प्रसंस्करण की मांग का आंकलन –</u>** जिले में ग्वारपाठा का उत्पादन बहुत कठिन नहीं है। उत्पादित ग्वारपाठा की पत्तियों की वाजिब कीमत सुनिश्चित करने के लिए मांग आधारित उत्पादन पर फोकस किया जायेगा। मांग की मात्रा और वांछित क्वालिटी का आंकलन करने के लिए फोरवार्ड लिंकेज पर कार्य किया जायेगा।
- **<u>खेती, विपणन एवं प्रसंस्करण को प्रोत्सहन के लिए सहयोग –</u>** जिले में ग्वारपाठा की खेती के लिए किसानों और विपणन व प्रसंस्करण के लिए उद्यमियों को आर्थिक, प्रशासनिक एवं ईज ऑफ डूईंग बिजनेस के लिए सहयोग किया जायेगा। मूल्यसंवर्द्धन के लिए लघु इकाईयों को जैल निकालने और प्रसंस्करण इकाई स्थापना में सहयोग दिया जाये। ताजी पत्तियों की गुणवत्ता बनाये रखने के लिए उचित भण्डारण की व्यवस्था के लिए आर्थिक सहयोग कर निजी क्षेत्र को प्रोत्साहित किया जायेगा।
- **<u>ब्रांडिंग एवं पैकेजिंग –</u>** चूरू जिले के इस उत्पाद को ''चूरू एलोवेरा'' ब्रांड के रूप में विकसित किया जायेगा। स्थानीय बाजार से शुरू कर राज्य, देश से विदेश तक उपलब्ध बाजार तक पहुंचने के लिए स्थानीय उद्यमियों के साथ निर्यातक फर्मों व कॉस्मेटिक / वेलनेस कम्पनियों से साझेदारी किये जाने के लिए सक्रिय सहयोग दिया जायेगा।
- **व्यापारिक अनुबन्ध (एमओयू) –** विपणन एवं प्रसंस्करण के लिए ग्वारपाठा कृषक समूह से ग्वारपाठा खरीदकर मैसर्स वैदिक हर्बल द्वारा पल्प तैयार कर मुक्तिवेदा वेलनेस प्राईवेट लिमिटेड, जयपुर द्वारा विपणन का कार्य करने के लिए व्यापारिक अनुबन्ध (एमओयू) किया जा रहा है। ग्वारपाठा पल्प का प्रसंस्करण इकाई की उत्पादन क्षमता 8 घण्टा कार्य अवधि के अनुसार प्रति माह 25000 किलोग्राम (अनुमानित) का पल्प उत्पादन होगा।

जिले में ग्वारपाठा की अपार सम्भावनाएं है और सफल खेती के लिए इन सम्भावनाओं को वास्तविकता में लाभ सभी स्टेकहोल्डर्स तक पहुंचाने के लिए निम्न कार्य किये जा रहे हैं–

- सरकार का एक वर्ष पूर्ण होने पर नेचर पार्क, चूरू में ग्वारपाठा उत्पाद की प्रदर्शनी लगाई गयी।
- गणतंत्र दिवस के उपलक्ष पर एक जिला एक उत्पाद के तहत ग्वारपाठा उत्पादन तकनीकी की झांकी आयोजित की गयी ।
- सरकार का एक वर्ष पूर्ण होने पर जिले में प्रगतिशील किसान द्वारा तैयार विभिन्न ग्वारपाठा उत्पाद का प्रदर्शन कर प्रोत्साहित किया गया ।
- गणतंत्र दिवस के उपलक्ष पर कृषि विज्ञान केंद्र द्वारा तैयार ग्वारपाठा उत्पाद की प्रदर्शनी आयोजित की गयी।

पंच गौरव कार्यक्रम के तहत एक जिला एक उपज – ग्वारपाठा को बढावा देने के लिए करवाये जाने वाले प्रस्तावित कार्यों की कार्ययोजना

क्रंस	बिन्दु	कार्ययोजना	संबंधित विभाग
1	कृषक जागरूकता और प्रशिक्षण कार्यशाला	सबसे पहले, जिले के किसानों को ग्वारपाठा की खेती के बारे में जानकारी दी जाएगी। इसके लिए कृषि विभाग द्वारा विशेष कार्य शालाएं, सेमिनार, और प्रशिक्षण शिविर आयोजित किए जाएंगे। इन कार्यशालाओं में ग्वारपाठा की खेती, इसकी देखभाल, लाभ और बाजार संभावनाओं पर विस्तृत जानकारी दी जाएगी और उक्त कार्यशाला में पूर्व में ग्वारपाठा के क्षैत्र में कार्य कर रहे उद्यमियों को आमंत्रित कर सुझावों का संग्रहण किया जाएगा।	कृषि विभाग, चूरू
2	ग्वारपाठा उत्कृष्टता केन्द्र की स्थापना	जिले में ग्वारपाठा की भरपूर सम्भावनाओं के दृष्टिगत उत्कृष्टता केन्द्र की स्थापना किया जाना प्रस्तावित है, जिससे ग्वारपाठा को एक नई पहचान मिल सकेगी।	कृषि विभाग, चूरू
3	प्रोसेसिंग इकाईयों की स्थापना	ग्वारपाठा का व्यावसायिक उपयोग करने वाले उद्योगों और कम्पनियों के साथ साझेदारी की जाऐगी। ग्वारपाठा से विभिन्न उत्पादों का बड़े पैमाने पर उत्पादन किया जा सकता है, और इससे किसानों को सीधे लाभ होगा। जिले में ग्वारपाठा के संवर्द्धन हेतु प्रोसेसिंग इकाईयां लगाया जाना प्रस्तावित है, जिससे रोजगार का सृजन होगा और किसानों को ग्वारपाठा उत्पादों की उचित लागत प्राप्त हो सकेगी एवं ग्वारपाठा उत्पाद के उपयोग को बढावा मिलेगा। जिले में प्रारम्भिक रूप से 05 इकाईयां लगाया जाना प्रस्तावित है।	कृषि विभाग, चूरू
4	किसानों को ग्वारपाठा उत्पादन पर अनुदान	जिले में ग्वारपाठा की खेती को बढावा देने के लिए किसानों को ग्वारपाठा, बुवाई करने के इच्छुक किसानों को अनुदान दिया जाना प्रस्तावित है, जिससे किसान उत्कृष्ट तरीके से ग्वारपाठा का उत्पादन कर सके।	कृषि विभाग, चूरू
5	ग्वारपाठा में ड्रिप प्रणाली का उपयोग	ग्वारपाठा में बूंद–बूंद सिंचाई के उपयोग को बढावा दिया जाना प्रस्तावित है।	कृषि विभाग, चूरू
6	विक्रय केन्द्रों की स्थापना	ग्वारपाठा उत्पादों के विपणन हेतु किसानों से विक्रय केन्द्र की स्थापना किये जाने पर सहायता उपलब्ध करवाने से उत्पादक किसानों को संबल मिलेगा।	कृषि विभाग, चूरू

एक जिला एक वनस्पति प्रजाति– खेजड़ी

पंच गौरव कार्यक्रम के तहत एक जिला एक वनस्पति प्रजाति के अनुसार चूरू जिले में खेजड़ी प्रजाति का चयन किया गया है। खेजड़ी का वैज्ञानिक नामः– Prosopis cineraria है। खेजड़ी मरूस्थल का एक वृक्ष है। इसे अन्य नाम कल्पतरू एवं मरूस्थल का राजा कहा जाता है। खेजड़ी को 31 अक्टूबर, 1983 को राज्य वृक्ष घोषित किया गया। खेजड़ी वृक्ष पर 05 जून, 1988 को डाक टिकट जारी किया गया है। अमृतादेवी विश्नोई ने खेजड़ी के वृक्षों के संरक्षण के लिये बलिदान दिया।

- **खेजड़ी के पेड़ का साहित्यिक एवं सांस्कृतिक महत्वः-** कन्हैयालाल सेठिया की कविता 'मींझर' में खेजड़ी की उपयोगिता और महत्व का सुन्दर चित्रण किया गया है। दशहरे के दिन शमी के वृक्ष की पूजा करने की परंपरा भी है। रावण दहन के बाद घर लौटते समय शमी के पत्ते लूट कर लाने की प्रथा है जो स्वर्ण का प्रतीक मानी जाती है। पांडवों द्वारा अज्ञातवास के अंतिम वर्ष में गांडीव धनुष इसी पेड़ में छुपाए जाने के उल्लेख मिलते हैं। इसी प्रकार लंका विजय से पूर्व भगवान राम द्वारा शमी के वृक्ष की पूजा का उल्लेख मिलता है। शमी या खेजड़ी के वृक्ष की लकड़ी यज्ञ की समिधा के लिए पवित्र मानी जाती है।
- जिले में खेजड़ी के वृक्षों की कुछ महत्वपूर्ण विशेषताएँ निम्नलिखित हैंः
  - **स्थानीय जलवायु के अनुकूलः** खेजड़ी का पेड़ राजस्थान के शुष्क और गर्म जलवायु में बहुत अच्छे से बढ़ता है। चूरू जिले की जलवायु, जिसमें कम वर्षा और अधिक गर्मी होती है, खेजड़ी के लिए आदर्श है। यह पेड़ सूखा सहनशील और उच्च तापमान में भी जीवित रह सकता है।
  - **पानी की कम आवश्यकताः** खेजड़ी के पेड़ कम पानी में भी बढ़ सकते हैं, और यह रेगिस्तानी क्षेत्रों में एक महत्वपूर्ण वनस्पति है। इस कारण, चूरू जिले में पानी की कमी के बावजूद खेजड़ी की खेती की जा सकती है।
  - **मूल्यवान कृषि उत्पादः** खेजड़ी के पत्तों का उपयोग पशुओं के चारे के रूप में किया जाता है, खासकर गाय और बकरियों के लिए। इसके अलावा, खेजड़ी का गोंद और सांगरी भी आर्थिक दृष्टि से महत्वपूर्ण होते हैं। खेजड़ी का गोंद औद्योगिक और चिकित्सा उपयोग में आता है, जबकि इसके फल (सांगरी) का उपयोग विभिन्न पारंपरिक व्यंजनों में किया जाता है।
  - **मिट्टी के लिए फायदेमंदः** खेजड़ी की जड़ें मिट्टी को मजबूत बनाती हैं और भूमि की उपजाऊ क्षमता को बढ़ाती हैं। यह पेड़ न केवल जलवायु के अनुकूल है, बल्कि यह मृदा अपरदन (erosion) को भी रोकता है।

- **बहुउद्देशीय उपयोगः** खेजड़ी के पेड़ से लकड़ी भी प्राप्त होती है, जो निर्माण कार्यों में उपयोगी होती है। इसके अलावा, खेजड़ी का उपयोग पारंपरिक चिकित्सा में भी किया जाता है।
- **कम रखरखावः** खेजड़ी के पेड़ को बहुत अधिक देखभाल और रखरखाव की आवश्यकता नहीं होती। यह अपने आप में एक मजबूत और स्वावलंबी वृक्ष है, जो प्राकृतिक परिस्थितियों में आसानी से बढ़ता है।
- **विविधता में लाभः** खेजड़ी के पत्ते और फल विशेष रूप से पशुपालन और कृषि दोनों में उपयोगी होते हैं। इससे किसानों को एक ही वृक्ष से कई प्रकार के लाभ प्राप्त होते हैं, जैसे कि पशु चारा, गोंद, फल और लकड़ी।
- **पर्यावरणीय लाभः** खेजड़ी का पेड़ पर्यावरण को भी लाभ पहुँचाता है। यह कार्बन डाइऑक्साइड को अवशोषित करता है और ऑक्सीजन छोड़ता है, जिससे वायु गुणवत्ता में सुधार होता है।

जिले में खेजड़ी के वृक्षों की अपार सम्भावनाएं है और इन सम्भावनाओं को वास्तविकता में लाभ सभी स्टेकहोल्डर्स तक पहुंचाने के लिए निम्न कार्य किये जा रहे हैंः–

- गणतंत्र दिवस के उपलक्ष पर एक जिला एक उत्पाद के तहत के खेजड़ी महत्व के बारे में झांकी आयोजित की गयी।
- स्कूलों, कॉलेजों और पंचायतों के माध्यम से जन जागरूकता अभियान चलाना, जिसमें स्थानीय लोगों को वनस्पति के महत्व के बारे में बताया जा रहा है ।
- **खेजड़ी वाटिका विकसित करनाः–**चूरू जिले में वन विभाग द्वारा 6 ''खेजड़ी वाटिका'' विकसित किये जाने प्रस्तावित है।
- **पंच गौरव योजना अन्तर्गत साझेदारी और सहयोगः–** विभागीय नर्सरियों में विभागीय योजनाओं में 15 लाख पौध तैयार किये जा रहे हैं। आमजन के वितरण के लिये सभी क्षैत्रीय वन अधिकारियों को 10 प्रतिशत पौधे चिन्हित प्रमुख प्रजाति खेजड़ी के तैयार करने हेतु निर्देशित किया जा चुका है। इनका पौधारोपण एवं पौध वितरण में उपयोग लिया जायेगा।

पंच गौरव कार्यक्रम के तहत एक जिला एक वनस्पति प्रजाति–खेजड़ी प्रजाति को बढावा देने के लिए करवाये जाने वाले प्रस्तावित कार्यो की कार्ययोजना

क्रंस	बिन्दु	कार्ययोजना	संबंधित विभाग
1	''पंच गौरव'' कार्यक्रम के तहत एक जिला–एक वनस्पति प्रजाति के अनुसार चूरू जिले में खेजड़ी प्रजाति को बढावा देना।	इस विभाग की विभागीय नर्सरियों में विभागीय योजनाओं में विभिन्न प्रजाति के पौधे वितरण एवं पौधारोपण हेतु तैयार किये जा रहे हैं, जिनमें TOFR योजनान्तर्गत 12 माह व 24 माह के कुल 15.00 लाख पौध तैयार किये जा रहे है जिनका वितरण वर्ष 2025–26 में किया जायेगा। जिनमें विभिन्न स्थानीय प्रजाति के पौधे तैयार किये जा रहे है। नर्सरियों में विभागीय योजनाओं में वर्ष 2024–25 में नवीन पौध तैयारी हेतु प्राप्त लक्ष्यों में 5 से 10 प्रतिशत पौधे चिन्हित प्रमुख प्रजाति खेजड़ी एवं सह प्रजातियों (बेर, नीम, पीलू, लिसोड़ा) के पौधे तैयार किए जा रहे हैं जिनका उपयोग पौधारोपण एवं पौध वितरण में लिया जायेगा।	उप वन संरक्षक, चूरू
2	जन जागरूकता अभियान चलाना, जिसमें स्थानीय लोगों को वनस्पति के महत्व के बारे में बताया जाऐगा। यह अभियान स्कूलों, कॉलेजों, और पंचायतों के माध्यम से चलाया जायेगा।	जन जागरूकता अभियान चलाना, जिसमें स्थानीय लोगों को वनस्पति के महत्व के बारे में जानकारी हेतु वन विभाग द्वारा जिला स्तरीय पंच गौरव (खेजड़ी प्रजाति) जागरूकता अभियान (रैली आयोजन, नुक्कड़–नाटक, बैनर फ्लेक्स आदि के माध्यम से)	उप वन संरक्षक, चूरू
3	वृक्षारोपण कार्यक्रमः प्रत्येक जिले में चुनिंदा वनस्पति की प्रजातियों का वृक्षारोपण किया जाए। सरकारी और गैर–सरकारी संस्थाओं के सहयोग से वृक्षारोपण कार्यक्रम चलाए जाएं। ''खेजड़ी वाटिका'' विकसित करना।	चूरू जिले में चिन्हित वनस्पति की प्रजातियों का अधिक से अधिक वृक्षारोपण करने हेतु वन विभाग के स्तर पर प्रत्येक रेंज में 15 हैक्ट. वन क्षेत्र में एक–एक ''खेजड़ी वाटिका'' विकसित की जानी प्रस्तावित है, जिसमें वृक्षारोपण स्थल की चार दीवार निर्माण 6 फीट उंचाई, मुख्य द्वार निर्माण, ईको पाथ, पानी की व्यवस्था हेतु बोरवेल एवं सोलर लगाना, 7500 पौधे प्रत्येक रेंज में लगाये जाने आदि कार्य हेतु प्रति वाटिका हेतु अनुमानित व्यय 1 करोड़ (वन मण्डल अधिन कुल 6 रेंजो हेतु)	उप वन संरक्षक, चूरू
4	संरक्षण और देखभालः इस योजना के अंतर्गत वृक्षारोपण के बाद उन पौधों की देखभाल और संरक्षण की जिम्मेदारी भी तय की जाना, ताकि वे बड़े होकर एक मजबूत पारिस्थिति की तंत्र का हिस्सा बन सकें।	उक्त योजना के अन्तर्गत वन विभाग द्वारा ग्राम वन सुरक्षा एवं प्रबंध समिति के माध्यम से खेजड़ी वाटिका की आगामी 5 वर्ष तक देखभाल और संरक्षण कार्य किया जायेगा।	उप वन संरक्षक, चूरू
5	साझेदारी और सहयोगः इस योजना के सफल कार्यान्वयन के लिए स्थानीय वन विभाग, पर्यावरण संगठन, और नागरिक समाज संगठनों के साथ साझेदारी की आवश्यकता होगी।	वन विभाग की 6 रेंज अन्तर्गत प्रत्येक रेंज स्तर पर ''पंच गौरव'' (खेजड़ी प्रजाति) जागरूकता अभियान (रैली आयोजन, नुक्कड़–नाटक, बैनर फ्लेक्स आदि के माध्यम से) चलाया जायेगा।	उप वन संरक्षक, चूरू

एक जिला एक उत्पाद – लकड़ी के उत्पाद

चूरू जिला अपने परम्परागत हस्तशिल्प एवं आधुनिक तकनीकी के प्रयोग से उत्पादित उत्कृष्ट लकड़ी उत्पादों के लिए अलग पहचान रखता है। साथ ही यहाँ का शुष्क वातावरण भी लकड़ी उद्योग के अनुकूल है। यही कारण है कि जिले में एक जिला एक उत्पाद के रूप में लकड़ी के उत्पाद का चयन किया गया है। जिले में विभिन्न प्रकार के लकड़ी के उत्पादों का विनिर्माण किया जाता है जो निम्नानुसार हैः–

- **चंदन की लकड़ी के कलात्मक उत्पादः–** आम तौर पर शेखावाटी का लकड़ी का फर्नीचर अपनी कलात्मकता और गुणवत्ता के लिये जाना जाता है, जिसमें बेहतरीन डिजाईन एवं **कर्विंग** देकर बनाया गया फर्नीचर शामिल है। इसके अतिरिक्त चूरू जिले का सेण्डलवुड आर्ट देश ही नहीं अपितु विदेश तक अपनी अमिट छाप छोड़े हुवे है। चंदन की लकड़ी पर परम्परागत रूप से किया गया सूक्ष्म नक्काशी का कार्य इस कला को देश में अपनी विशिष्ट पहचान दिलाता है। 'चंदन के चितेरों' के नाम से प्रसिद्ध चूरू के कलाकारों द्वारा बारीक डिजाईन से तैयार की हुई वीणा, पंखी, गुड़ीया, तलवार आदि प्रमुख उत्पाद है। ये कलाकार अपनी कलात्मकता के कारण जिला स्तर एवं राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न पुरस्कारों द्वारा सम्मानित किये जा चुके हैं।
- **लकड़ी के फर्नीचरः–** जिले में लकड़ी के विनिर्माण की कई इकाइयाँ कार्यरत है, जिनके द्वारा घरेलू एवं कार्यालयों में उपयोग में आने वाले लकड़ी के उत्पाद यथा टी–टेबल, बेड, कुर्सियाँ, सोफा, अलमीरा, बुक सेल्फ आदि जैसे उत्पादों का निर्माण किया जाता है। जिले मे निर्मित उत्पादों को बेहतरीन कलाकृतियों के साथ आधुनिक रूप से तैयार किये जाते है, जो कभी भी प्रचलन से बाहर नहीं होते हैं।

- **चूरू में लकड़ी पर आधारित उद्योगों का विवरणः–** चूरू जिले में उद्यम रजिस्ट्रेशन पोर्टल के अनुसार 1452 इकाइयाँ लकड़ी उत्पादों से सम्बन्धित है, जिनमें लगभग सोलह हजार व्यक्तियों को प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से रोजगार प्राप्त हो रहा है। ये इकाइयाँ मुख्यतः चूरू, सरदारशहर एवं रतनगढ़ तहसीलों में रीको औद्योगिक क्षेत्र एवं इससे बाहर शहरी एवं ग्रामीण दोनों क्षेत्रों में स्थापित है। इन इकाइयों में से लगभग 40 इकाइयाँ देश–विदेश (यू. एस, जर्मनी, नीदरलैण्ड, डेनमार्क आदि) में लकड़ी उत्पादों का निर्यात करती हैं।

- **जिलें में ओडीओपी उत्पाद से संबंधित इकाइयों के प्रोत्साहन हेतु विभिन्न योजनाओं में किए गए प्रावधान :–**
  - **एक जिला एक उत्पाद नीति 2024:–**
    1. नवीन सूक्ष्म इकाइयों के मान्य परियोजना लागत का 25 प्रतिशत अथवा अधिकतम 15 लाख रू. तक मार्जिन मनी अनुदान।
    2. नवीन लघु इकाइयों के मान्य परियोजना लागत 15 प्रतिशत अथवा अधिकतम 20 लाख रू. तक मार्जिन मनी अनुदान।
    3. अनुसूचित जाति/जनजाति/महिला/विशेष **योग्यजन/35** वर्ष तक के युवा उद्यमियों को उपरोक्त मार्जिन मनी अनुदान के अतिरिक्त अधिकतम 05 लाख रू. का मार्जिन मनी अनुदान।
    4. सूक्ष्म एवं लघु उद्योगों को एडवांस टेक्नोलॉजी व सॉफ्टवेयर अधिग्रहण हेतु किए गए व्यय पर 50 प्रतिशत या अधिकतम 05 लाख रू. तक की सहायता।
    5. क्वालिटी सर्टिफिकेशन व आईपीआर हेतु व्यय पर 75 प्रतिशत या अधिकतम 03 लाख रू. तक पुनर्भरण सहायता।
    6. उत्पादों के विपणन से सम्बन्धित राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय आयोजनों मे भाग लेने के लिए योजनानुसार स्टॉल रेण्ट अनुदान एवं आवागमन हेतु अधिकतम 02 लाख रू. तक वित्तीय सहायता।
    7. ई–कॉमर्स के प्रयोग को प्रोत्साहित करने हेतु 2 साल तक प्लेटफॉर्म फीस/कमीशन पर 75 प्रतिशत या अधिकतम 01 लाख रू. तक प्रतिवर्ष पुनर्भरण।
    8. कैटालॉगिंग व ई–कॉमर्स वेबसाईट विकास के लिए कुल व्यय पर 60 प्रतिशत या अधिकतम 75000 रू. तक एकमुश्त सहायता।
    9. एकीकृत क्लस्टर विकास योजना के तहत कॉमन फैसिलिटी सेंटर की स्थापना हेतु सहायता।

- अन्य विभागीय योजनाओं (प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम डॉ॰ भीमराव अम्बेडकर दलित आदिवासी उद्यम प्रोत्साहन योजना) के माध्यम से वुडन उत्पाद से संबंधित उद्यमों को वित्तीय संस्थानों के माध्यम से उपलब्ध करवाए गये ऋण पर मार्जिन मनी अनुदान या ब्याज अनुदान दिया जाता है। साथ ही राजस्थान निवेश प्रोत्साहन योजना के तहत वुडन मैन्युफैक्चरिंग इकाइयों को स्टाम्प ड्यूटी में छूट, कन्वर्जन चार्जेज में छूट, निवेश अनुदान, ब्याज अनुदान, रोजगार सृजन अनुदान आदि हेतु पात्रता प्रमाण पत्र जारी किया जा रहा है। इसके अतिरिक्त वुडन/सेण्डलवुड से कलात्मक उत्पाद बनाने वाले दस्तकारों का आर्टिजन कार्ड जारी किया जाता है, राज्य सरकार द्वारा एकीकृत बाजार सहायता योजना के तहत वर्ष में अधिकतम 6 मेलों में भाग लेने हेतु आर्टिजन कार्ड धारक दस्तकारों को स्टाल रेन्ट अनुदान देकर प्रोत्साहित किया जा रहा है।

जिले में वुडन उत्पाद की अपार सम्भावनाएं है और इन सम्भावनाओं को वास्तविकता में लाभ सभी स्टेकहोल्डर्स तक पहुंचाने के लिए निम्न कार्य किये जा रहे हैं–

- पंच गौरव जिला स्तरीय प्रदर्शनीः–12 दिसम्बर, 2024 को एक जिला एक उत्पाद ब्रॉशर का विमोचन किया गया।
- पंच गौरव कार्यक्रम अन्तर्गत 'एक उत्पाद' (वुडन उत्पाद) जिला स्तरीय प्रदर्शनी में जिले में निर्मित उत्कृष्ट उत्पादों का प्रभारी मंत्री महोदय द्वारा अवलोकन किया गया।
- जिला स्तर पर ओडीओपी (वुड उत्पाद) उत्कृष्ट उत्पाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं सांत्वना पुरस्कार प्रदान किये गये।
- गणतंत्र दिवस पर झांकी प्रदर्शनीः– 26 जनवरी 2025 को जिला स्तर पर आयोजित गणतंत्र दिवस कार्यक्रम में पंचगौरव से संबंधित झांकियों की प्रदर्शनी की गई। कार्यक्रम में एक उत्पाद के रूप में चयनित लकड़ी के उत्पाद की झांकी प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिसमें लकड़ी के फर्नीचर एवं चंदन की लकड़ी से बने उत्पादों को शामिल किया गया।
- दिनांक 01 एवं 02 फरवरी, 2025 को आयोजित बर्ड फेस्टीवल, छापर में वुडन उत्पाद की प्रदर्शनी लगाई गई।
- दिनांक 07.03.2025 को जिला उद्योग एवं वाणिज्य केन्द्र, चूरू में जागरूकता कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें चयनित उत्पाद को प्रोत्साहन दिये जाने हेतु विभागीय योजनाओं एवं नीतियों की जानकारी दी गई।

पंच गौरव के रूप में एक जिला एक उत्पाद– वुड़न के उत्पाद के विकास हेतु प्रस्तावित कार्ययोजना एवं प्रमुख प्रस्तावित कार्य/गतिविधिया निम्न है

क्रंस	बिन्दु	कार्ययोजना	संबंधित विभाग
1.	सेंटर ऑफ ऐक्सीलेंस की स्थापना	जिले में वुडन उत्पाद के विकास हेतु भविष्य की योजनाओं पर काम किये जाने एवं प्रौद्योगिकी, कौशल और दक्षता में बढ़ावा देने हेतु जिले में सेंटर ऑफ ऐक्सीलेंस की स्थापना की जा सकती है, जिसमें रॉ–मैटेरियल से लेकर उपभोक्ता की पहुंच से संबंधित सुविधाओं को विकसित किया जा सकता है, जिसमें क्वालिटी टेस्टिंग लैब, सीएफसी, वर्कशॉप/सेमिनार हॉल, मार्केटिंग पैलेस आदि की स्थापना की जा सकती है।	जिला उद्योग केन्द्र, चूरू
2.	जागरूकता शिविर एवं वर्कशॉप का आयोजन	पंच गौरव कार्यक्रम के तहत ब्लॉक स्तर पर जागरूकता शिविरों का आयोजन कर वुडन उत्पादों सें संबंधित ईकाइयों के विकास हेतु मुख्यालय स्तर से क्रियान्वय हेतु मार्गदर्शिका प्राप्त होने के पश्चात एक जिला एक उत्पाद नीति–2024 द्वारा मिलने वाले परिलाभो के संबंध में जानकारी उपलब्ध करवा अधिकाधिक उद्यमियों को लाभान्वित किये जाने का प्रयास किया जायेगा। जिले में निर्मित वुड उत्पाद का देश विदेश में निर्यात किया जाता है। अतः निर्यात को बढावा देने के उददेश्य से जिले के औद्योगिक क्षेत्रों में वर्कशॉप माध्यम से उद्यमियों से संपर्क कर निर्यात को बढावा देने के लिए आयात–निर्यात कोड जारी करवाने हेतु प्रोत्साहित किया जायेगा। साथ ही वर्कशॉप के माध्यम से निर्यात नीति 2024 के बारे में विस्तृत जानकारी दी जायेगी।	जिला उद्योग केन्द्र, चूरू
3.	मेले–प्रदर्शनी एवं बायर्स–सेलर्स मीट	मार्केटिंग के अवसर उपलब्ध करवाने हेतु जिला स्तर पर वुडन उत्पादों के लिए मेले–प्रदर्शनी एवं बायर्स–सेलर्स मीट का आयोजन किया जाऐगा।	जिला उद्योग केन्द्र, चूरू
4.	क्राफ्ट प्रशिक्षण	प्रशिक्षण हेतु IICD: Indian Institute of Crafts and Design अथवा अन्य विषय विशेषज्ञ से समन्वय किया जाऐगा।	जिला उद्योग केन्द्र, चूरू
5.	ऑनलाईन प्लेटफार्म	जिला स्तर पर वुडन से संबंधित उत्पादों को पहचान दिलाने के लिये कार्यालय में Gem, ONDC जैसे प्लेटफार्म पर रजिस्ट्रेशन के संबंध में मुख्यालय से प्राप्त दिशा–निर्देश अनुसार हेल्प–डेस्क स्थापित कर अधिकाधिक उद्यमियों के ऑनलाईन प्लेटफार्म पर रजिस्ट्रेशन किये जाने के संबंध में प्रयास किये जायेंगे।	जिला उद्योग केन्द्र, चूरू
6.	वुडन उत्पाद पर लघु फिल्म	चंदन की लकड़ी के उत्पादों एवं फर्नीचर उत्पादों की उत्पादन प्रक्रिया एवं निर्मित उत्पादों पर लघु फिल्म या सफलता की कहानी तैयार की जा जाएगी।	जिला उद्योग केन्द्र, चूरू
7.	ओडीओपी वॉल निर्माण	सरकारी परिसर (जिला कलक्टर कार्यालय/सर्किट हाऊस आदि) अथवा प्रसिद्ध पर्यटन स्थलों (तालछापर अभ्यारण/सालासर बालाजी मंदिर) पर वुडन उत्पादकों से उत्पाद खरीदकर ओडीओपी वॉल का निर्माण किया जाना प्रस्तावित है।	जिला उद्योग केन्द्र, चूरू
8.	एक जिला एक उत्पाद के प्रोत्साहन हेतु एमएसई –सीडीपी योजना के अन्तर्गत कॉमन फैसिलिटी सेंटर की स्थापना	एमएसई सीडीपी योजना के तहत जिले के रतनगढ क्षेत्र में वुडन फर्नीचर एण्ड हैण्डीक्राफ्ट कलस्टर, चूरू राज्य स्तर पर प्रक्रियाधीन है, जिसके स्वीकृत होने के उपरांत मुख्यालय से प्राप्त निर्देशानुसार कॉमन फैसिलिटी सेटर स्थापित किये जाने से संबंधित कार्यवाही की जायेगी।	जिला उद्योग केन्द्र, चूरू

एक जिला एक पर्यटन स्थल–श्री सालासर बालाजी मन्दिर

श्री सालासर बालाजी मन्दिर स्थल को पंच गौरव के रूप में एक जिला एक पर्यटन स्थल के रूप में चिन्हित किया गया है। सलासर बालाजी मंदिर राजस्थान के चूरू जिले के सालासर कस्बे में स्थित एक प्रसिद्ध मंदिर है, जो भगवान हनुमान को समर्पित है। यह मंदिर विशेष रूप से उन भक्तों के लिए महत्वपूर्ण है जो भगवान हनुमान से शक्ति, साहस और सफलता की प्राप्ति के लिए आशीर्वाद मांगते हैं।

- **पर्यटन स्थल सालासर का संक्षिप्त इतिहास–**
  - संत शिरोमणी, सिद्धपुरूष, भक्त प्रवर श्री मोहनदास जी महाराज की असीम भक्ति से प्रसन्न होकर स्वंय रामदूत श्री हनुमान जी ने मूर्ति रूप में विक्रम संवत 1811 (सन 1754) श्रावण शुक्ला नवमी शनिवार आसाट ग्राम में प्रकट होकर अपने परम भक्त मोहनदास जी महाराज की मनोकामना पूर्ण की। अपने आराध्य से प्राप्त आशीर्वाद के फलस्वरूप श्री मोहनदास जी ने विक्रम संवत 1815 (सन 1758) में सालासर में उदयराम जी द्वारा मंदिर निर्माण करवाकर श्री उदयराम जी एवं उनके वंशजों को सेवा, पूजा का कार्य सौंपकर स्वयं जीवित समाधिस्थ हो गये।
  - सिद्धपुरूष एवं भक्त शिरोमणी बाबा मोहनदास जी महाराज की तपोस्थली एवं वर्तमान में जन–जन की आस्था केन्द्र सिद्धपीठ श्री सालासर धाम राजस्थान प्रान्त के चूरू जिले की सुजानगढ़ तहसील की पूर्वी सीमा पर स्थित है। रियासतकालिन समय में सालासर ग्राम बीकानेर राज्याधीन था। धर्मपत्नी कान्ही बाई के बाई का ठिकाणा सीकर ग्राम रूल्याणी के पं. 06 भाइयों की इकलौती कान्ही बाई से एक जिसका नाम उदयराम बाल्यावस्था (5 वर्ष) में ही का देवलोकगमन लच्छीराम जी ने अपने

जहां पर सुखराम जी अपनी साथ निवास करते थे। कान्ही (वर्तमान जिला सीकर) के लच्छीराम जी की पुत्री थी जो बहन थी। पं. सुखाराम जी व पुत्ररत्न की प्राप्ति हुई, रखा गया। उदयराम की उसके पिता पं. सुखराम जी (स्वर्गवास) हो गया। पं. सबसे छोटे अविवाहित पुत्र मोहन को सहयोग के लिए अपनी पुत्री के साथ कान्ही बाई के परिवार के पालन पोषण हेतु सालासर भेज दिया। पं. लच्छीरामजी एवं पं. सुखराम जी का परिवार धर्मपरायण व भगवतानुरागी होने के कारण मोहन को सालासर में अपनी बहन के घर भगवत भजन का

सुमचित वातावरण मिल गया। उपर्युक्त दोनों ही परिवारों के आराध्य अंजनीसुत हनुमान थे। तत्पश्चात मोहन सन्यास ग्रहण कर मोहन से मोहनदास बन गये। एक दिन भक्त प्रवर हनुमानजी साधु वेश में, जिनके मुख मंडल पर दाढ़ी और मूंछ तथा हाथ में छड़ी के साथ भक्त मोहनदास को दर्शन दिये। तात्कालिक समय में ही आसोटा ग्राम के किसान के द्वारा खेत की जुताई का कार्य करते समय उसके हल का काल किसी वस्तु में अटक जाने से बैलों को रोककर उस स्थान की खुदाई करने पर श्रीराम लक्ष्मण को कन्धों पर बैठे हुए श्री हनुमानजी महाराज की मूर्ति मिली, मूर्ति को बैलगाड़ी में विराजमान कर ग्राम्यजन के साथ भजन कीर्तन करते हुए सालासर के लिए रवाना हो गये।

- भक्त शिरोमणी मोहनदास जी महाराज अपने तपोबल से विक्रम संवत 1850 (सन 1974) वैशाख शुक्ला त्रयोदशी को प्रातः काल जीवित समाधि लेकर ब्रह्म में लीन हो गये, सालासर बालाजी मंदीर दो प्रमुख उत्सव श्री मोहनदास जी महाराज का श्राद्ध दिवस (श्राद्ध पक्ष में त्रयोदशी) एवं श्री बालाजी महाराज का प्राक्टय दिवस (श्रावण शुक्ला नवमी) बहुत ही हर्षाल्लास व उत्साह के साथ मनाता है।

- **यात्री एवं मेला प्रबंधनः–**
  - यात्री सुविधार्थ 3 Over Bridge एवं 1 Underpass व लोहे की रेलिंगों का निर्माण, सम्पूर्ण मेला ग्राउंड में कूंलिग प्लांट के साथ वुडन फलॉर का निर्माण ।
  - 20 आईपी कैमरों एवं 160 से अधिक एच.डी. कैमरों द्वारा समस्त सालासर में ग्राम में 24X7 निगरानी एवं 4 नये मेटल डिटेक्टर द्वारा मंदिर के अंदर स्थित प्रवेश द्वार से पहले सुरक्षार्थ कड़ी जांच व्यवस्था।
  - **चिकित्साः–** हॉमयोपैथिक अस्पताल भवन को छोड़कर जनरल अस्पताल भवन, माता–शिशु कल्याण केन्द्र भवन, 'ए' श्रेणी आयुर्वेद अस्पताल भवन निर्मित है।
  - **शिक्षाः–** सीनियर सैकण्डरी स्कूल, बालिका उच्च माध्यमिक स्कूल, वरिष्ठ उपाध्याय स्तर का संस्कृत विद्यालय, राजकीय दामोदरलाल सरावगी बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय के भवन आदि निर्मित है। संस्कृत महाविद्यालय के भवन का निर्माण।
  - **बिजलीः–** 7 High-Mast लाईट्स, समस्त सालासर में स्ट्रीट लाईटस।
  - **सफाई एवं पर्यावरणः–** सालासर में स्थित व उसके आस पास के इलाके की सड़कों के दोनों तरफ वृक्षारोपण एवं बालाजी मंदिर की साफ–सफाई व वृक्षारोपन।

- **जलः–** आरओ प्लांट के द्वारा दर्शनार्थियों को पानी के पाउच देने की व्यवस्था। विभिन्न स्थानों पर वॉटर कूलर एवं प्याऊ का संचालन एवं बड़ी पानी की टंकियों द्वारा सार्वजनिक स्थानों पर, धर्मशालाओं एवं स्कूलों में पानी की सप्लाई।

श्री सालासर बालाजी मंदिर के विकास हेतु निम्न कार्य किये जा रहे हैंः–

- राज्य सरकार की वर्ष 2024–25 की बजट घोषणा के तहत लगभग 475.00 लाख की लागत से पुलिस थाना तिराहे से मंदिर की और बस स्टैण्ड मोड तक, बस स्टैण्ड मोड से मंदिर की और एस.बी.आई. एटीएम तक, बस स्टैण्ड से बस स्टैण्ड के सामने होते हुए, संगरिया धर्मशाला हनुमानगघाटी होते हुए, लोसल रतनगढ़ हाईवे तक, बस स्टैण्ड गेट से श्रीजन हॉस्पिटल होते हूए हनुमानघाटी तक स्वागत पथ श्रीबालाजी धाम में बनावाया जाना है।
- पंच गौरव के तहत श्री सालासर बालाजी मन्दिर में आने वाले पर्यटक/श्रद्धालूओं को सुरक्षा एवं जानकारी प्रदान करने हेतु पर्यटक सहायता बलों की नियुक्ति की गई है।

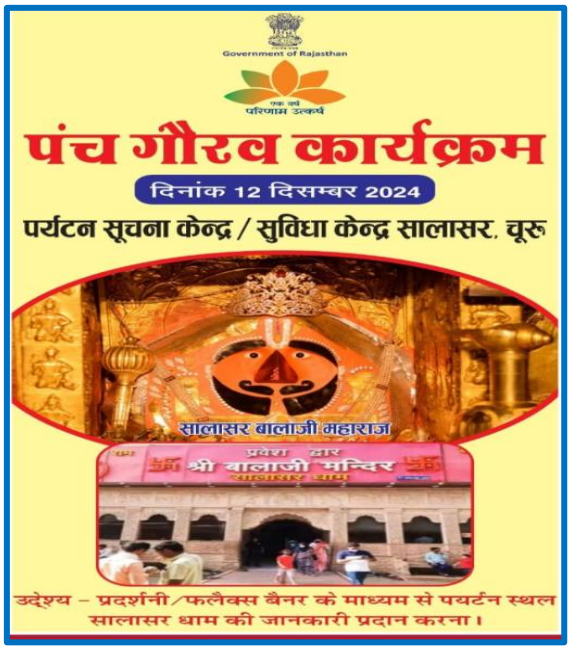

पंच गौरव के रूप में एक जिला एक पर्यटन स्थल श्री सालासर बालाजी मंदिर के विकास हेतु प्रस्तावित कार्ययोजना एवं प्रस्तावित कार्य/गतिविधिया निम्न है–

क्रंस	बिन्दु	कार्ययोजना	संबंधित विभाग
1.	प्रचार–प्रसार	सालासर बालाजी को एक प्रमुख पर्यटन स्थल के रूप में प्रमोट करने के लिए राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर प्रचार अभियान चलाया जायेगा। सोशल मीडिया, वेबसाइट, ब्रोशर और टूरिज्म फेयर के माध्यम से इसका प्रचार किया जायेगा। साथ ही, पर्यटन विभाग की वेबसाइट और अन्य डिजिटल प्लेटफॉर्म्स पर सालासर बालाजी के बारे में अधिक जानकारी उपलब्ध कराई जाएगी।	पर्यटन विभाग
2	यात्रा के लिए सुविधाएं बढ़ाना	सालासर बालाजी जाने वाले पर्यटकों के लिए बेहतर यातायात सुविधाएं सुनिश्चित की जाएगी। यहां तक कि, विशेष बस सेवाएं, रेलवे स्टेशन से कनेक्टिविटी और टैक्सी सेवाएं बेहतर की जाएगी। इसके साथ ही, पर्यटकों के आराम के लिए होटल, रेस्टोरेंट, और विश्राम स्थल विकसित किए जाएंगे।	पर्यटन विभाग
3	धार्मिक और सांस्कृतिक कार्यक्रम	सालासर बालाजी में धार्मिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जायेगा, जैसे भव्य आरती, भजन संध्या और महोत्सव, जो पर्यटकों को आकर्षित करें। साथ ही, वहां के स्थानीय सांस्कृतिक कार्यक्रम और मेलों का आयोजन किया जायेगा, जो क्षेत्र की सांस्कृतिक विरासत को प्रदर्शित करें।	पर्यटन विभाग
4	स्थानीय हस्तशिल्प और उत्पादों को बढ़ावा देना	सालासर क्षेत्र के स्थानीय हस्तशिल्प और उत्पादों को प्रमोट किया जायेगा। पर्यटकों के लिए वहां के पारंपरिक उत्पादों की दुकानें लगाई जाएं, जैसे राजस्थानी कढ़ाई, हस्तनिर्मित वस्त्र, गहने और अन्य स्थानीय कला और शिल्प। इससे स्थानीय व्यवसाय को बढ़ावा मिलेगा और पर्यटक स्थानीय संस्कृति से जुड़ सकेंगे।	पर्यटन विभाग
5	पर्यटन की जानकारी केंद्रों की स्थापना	सालासर बालाजी में और उसके आसपास एक पर्यटन सूचना केंद्र स्थापित किया जायेगा, जहां पर्यटकों को हर प्रकार की जानकारी मिल सके जैसे दर्शन के समय, आसपास के पर्यटन स्थल, खाने–पीने के स्थान आदि। यह केंद्र स्थानीय संस्कृति, इतिहास और धार्मिक महत्व पर आधारित जानकारी भी प्रदान करेगा।	पर्यटन विभाग
6	सुरक्षा और स्वच्छता पर ध्यान देना	सालासर बालाजी धाम में पर्यटकों की संख्या अधिक होने पर, वहां सुरक्षा व्यवस्थाओं को बेहतर किया जायेगा। पुलिस और सुरक्षा गार्डों की संख्या बढ़ाई जायेगी। इसके साथ ही, स्वच्छता को बढ़ावा देने के लिए नियमित सफाई और कूड़ा प्रबंधन की व्यवस्था की जायेगी।	पर्यटन विभाग
7	स्थानीय समुदाय की भागीदारी	सालासर बालाजी की सफलता के लिए स्थानीय समुदाय की भागीदारी बहुत महत्वपूर्ण है। उन्हें इस योजना में शामिल किया जायेगा, ताकि वे पर्यटन से जुड़े विभिन्न पहलुओं में योगदान दे सकें। स्थानीय लोगों को पर्यटक सेवा में प्रशिक्षण दिया जायेगा, ताकि वे बेहतर तरीके से पर्यटकों की सहायता कर सकें।	पर्यटन विभाग

क्रंस	बिन्दु	कार्ययोजना	संबंधित विभाग
8	समय–समय पर प्रचार–प्रसार और फेस्टिवल	सालासर बालाजी में हर साल विशेष महोत्सवों और मेलों का आयोजन किया जायेगा, जैसे बालाजी का वार्षिक मेला। इन अवसरों पर पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए विशेष प्रचार–प्रसार माध्यमों का उपयोग किया जायेगा।	पर्यटन विभाग
9	स्वागत पथ श्री बालाजी धाम, सालासर	1. पुलिस थाना तिराहे से मंदिर की ओर बस स्टैण्ड मोड तक सड़क निर्माण कार्य 2. बस स्टैण्ड मोड से मंदिर की ओर एसबीआई एटीएम तक सड़क निर्माण कार्य 3. बस स्टैण्ड मोड से बस स्टैण्ड के सामने होते हुए संगरिया धर्मशाला, हनुमानघाटी होते हुए लोसल–रतनगढ़ हाइवे तक सड़क निर्माण कार्य 4. बस स्टैण्ड गेट से श्रीजन हॉस्पिटल होते हुए हनुमानघाटी तक सड़क निर्माण कार्य 5. वृक्षारोपण, सौंदर्यीकरण, जनसुविधाओं इत्यादि हेतु मिश्रित व्यय	पर्यटन विभाग
10	तीर्थ यात्रियों हेतु फुट ओवर ब्रिज का निर्माण	हनुमानघाटी से पंडित पार्किंग वाया सृजन अस्पताल, एसबीआई एटीएम, मानसिंह धर्मशाला तक तीर्थ यात्रियों के लिये फुट ओवर ब्रिज निर्माण कार्य	पर्यटन विभाग
11	तीर्थ यात्रियों हेतु फुट ओवर ब्रिज का निर्माण	हनुमानघाटी से रतनगढ़ रोड होते हुए जीएचबी कुंज के पास मंदिर मेला ग्राउण्ड तक तीर्थ यात्रियों के लिये फुट ओवर ब्रिज निर्माण कार्य	पर्यटन विभाग
12	वीवीआईपी विश्राम गृह	सालासर में वीवीआईपी विश्राम गृह का निर्माण कार्य	पर्यटन विभाग
13	गाड़ी पार्किंग सुविधा	चाँदपोल व परमेश्वरी होटल के सामने ग्राउण्ड पार्किंग सुविधा का निर्माण कार्य	पर्यटन विभाग
14	मल्टीलेवल गाड़ी पार्किंग सुविधा	चाँदपोल एरिया में मल्टीलेवल कार पार्किंग सुविधा का निर्माण कार्य	पर्यटन विभाग
15	भारी वाहनों के लिए रिंगरोड	शोभासर अण्डरपास (एन एच–58) से पार्वतीसर अण्डरपास (एन एच–58) वाया लक्ष्मणगढ़ रोड, गनेड़ी रोड सालासर	पर्यटन विभाग